International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पुनर्गठित अजमेर जिले के प्रमुख दुर्ग

अभिषेक मिश्रा[1], डॉ. मनोज दाधीच[2]

[1]Ph.D Research Scholar, इतिहास (History),

[2]सहायक आचार्य (इतिहास विभाग), पेसिफिक सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, पाहेर विश्वविद्यालय, उदयपुर

Absract

राजस्थान को 'दुर्गो की भूमि' कहा जाता है। यहाँ के दुर्ग केवल सैन्य संरचनाएँ नही बल्कि राजनीतिक शक्ति सांस्कृतिक गौरव और स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान का मरूस्थलीय व पर्वतीय क्षेत्र दुर्ग–निर्माण क लिए उपयुक्त था। जिससे शत्रुओं से सुरक्षा और शासन की स्थिरता बनी रही। इन दुर्गो से जुड़े जौहर, साका और युद्धों की कथाएँ इतिहास को जीवंत बनाती हैं। स्थापत्य की दृष्टि से इनमें राजपूत और मुगल शैली का समन्वय दिखाई देता है।

पुनर्गठित अजमेर जिले के प्रमुख दुर्ग

तारागढ़ किला

अजमेर का तारागढ़ किला राजस्थान ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण उत्तर भारत के प्राचीनतम दुर्गों में गिना जाता है। यह किला अजमेर नगर के पश्चिमी भाग में स्थित नागपहाड़ की ऊँचाई पर समुद्र तल से लगभग 2,855 फीट (लगभग 885 मीटर) की ऊँचाई पर निर्मित है। अपनी सामरिक स्थिति और स्थापत्य कला के कारण यह किला "राजस्थान का जिब्राल्टर" कहलाता है।[1]

निर्माण और स्थापना

इस दुर्ग का निर्माण 7वीं–8वीं शताब्दी में चौहान वंश के शासक अजयपाल चौहान ने करवाया। इसे प्रारंभ में "अजयमेरु दुर्ग" कहा जाता था और इसके चारों ओर विकसित नगर का नाम अजयमेरु पड़ा, जो आगे चलकर अजमेर कहलाया। यह किला चौहान साम्राज्य की राजधानी और शक्ति का मुख्य केन्द्र बना।[2]

स्थापत्य विशेषताएँ

तारागढ़ किला अपनी सैन्य वास्तुकला और स्थापत्य कौशल के लिए प्रसिद्ध है। परकोटे और दीवारें मोटी पत्थर की दीवारें, जिनकी ऊँचाई और मजबूती दुर्ग को अभेद्य बनाती थीं।

प्रवेश द्वार

किले में तीन प्रमुख द्वार थे–

लक्ष्मी पोल

फूटा दरवाजा

गागुड़ी दरवाजा

ये दरवाजे युद्धकाल में रक्षात्मक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी थे।

जलाशय और भूमिगत मार्ग– दुर्ग में जल संग्रहण के लिए कई बड़े जलाशय बनाए गए थे। भूमिगत मार्ग युद्ध और घेराबंदी के समय रसद और सैनिक गतिविधियों के लिए बनाए गए थे।

बुर्ज और तोपखाना– किले में ऊँचे बुर्ज और सुरक्षा चौकियाँ थीं। बाद में मुग़ल और ब्रिटिश काल में यहाँ तोपखाने भी स्थापित किए गए।[3,4]

सामरिक महत्व

तारागढ़ किला अपने समय का रणनीतिक गढ़ था। इसकी ऊँचाई से अजमेर नगर, पुष्कर घाटी और व्यापारिक मार्गों पर पूरी तरह निगरानी रखी जा सकती थी। यह दुर्ग चौहान साम्राज्य की रक्षादृव्यवस्था का आधार था। पृथ्वीराज चौहान ने इस दुर्ग को अपनी शक्ति का केन्द्र बनाया। 1192 ई. में तराइन युद्ध के बाद जब मुहम्मद गौरी ने अजमेर पर अधिकार किया तो इस किले पर भी उसकी पकड़ बनी। मुग़ल काल में इसे राजपूताना का सैन्य चौकी केन्द्र बनाया गया। अकबर ने यहाँ अपनी सेना की तैनाती रखी क्योंकि अजमेर मुग़ल साम्राज्य का महत्वपूर्ण सूबेदार केन्द्र था।[5]

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व

यह किला कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी रहा, चौहान–गौरी संघर्ष, मुग़ल सत्ता का विस्तार और ब्रिटिश काल की सैन्य गतिविधियाँ।

ब्रिटिश काल में इसे Magazine और सैन्य गोदाम के रूप में प्रयोग किया गया।

किले के भीतर स्थित मंदिर और संरचनाएँ आज भी चौहानकालीन स्थापत्य की झलक प्रस्तुत करती हैं।[6]

वर्तमान स्थिति और पर्यटन दृष्टि से महत्व

आज तारागढ़ किला अजमेर का प्रमुख पर्यटन स्थल है। यहाँ से अजमेर शहर और अना सागर झील का विहंगम दृ श्यदिखाई देता है। किले के भग्नावशेष भी इसकी भव्यता और ऐतिहासिक गरिमा का परिचय कराते हैं। यह स्थल आज भी शोधार्थियों, इतिहासकारों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।[7]

तारागढ़ किला केवल एक दुर्ग नहीं, बल्कि अजमेर और राजस्थान के गौरवशाली इतिहास का प्रतीक है। यह चौहान वंश की वीरता, स्थापत्य कौशल और रणनीतिक दृष्टि का परिचायक है। इसकी ऊँचाई और स्थापत्य विशेषताएँ इसे अन्य किलों से अलग पहचान दिलाती हैं। आज यह अजमेर के सांस्कृतिक पर्यटन का प्रमुख केन्द्र है और इसे "राजस्थान का जिब्राल्टर" कहना उचित ही है।

किशनगढ़ किला

भूमिका

अजमेर जिले का किशनगढ़ किला राजस्थान के मध्यकालीन किलों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह किला न केवल राजपूत वीरता और स्थापत्य कला का प्रतीक है बल्कि इसकी दीवारों के भीतर समाई कला, संस्कृति और चित्रकला की परंपरा ने इसे वैश्विक ख्याति प्रदान की है।

निर्माण और स्थापना

किशनगढ़ नगर की स्थापना 1609 ई. में महाराजा किशन सिंह (जोधपुर के राजपरिवार से संबंधित) ने की थी। उन्होंने अपने नाम पर नगर और किले की नींव रखी, जो आगे चलकर किशनगढ़ राज्यकी राजधानी बना। किले का निर्माण सामरिक सुरक्षा और प्रशासनिक गतिविधियों के लिए किया गया था।[8]

स्थापत्य विशेषताएँ

किला नदी और तालाबों से घिरा हुआ था, जिससे इसकी रक्षा स्वाभाविक रूप से और भी सुदृढ़ हो जाती थी। इसमें विशाल प्रवेशद्वार, परकोटे और बुर्ज बनाए गए थे। अंदरूनी भाग में दरबार हॉल, आवासीय महल, मंदिर और भंडार गृह स्थित थे। किले के भीतर निर्मित भवनों पर राजपूत स्थापत्य शैली और मुगल प्रभावदोनों की छाप दिखाई देती है।[9]

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व

किशनगढ़ किला केवल राजनीतिक सत्ता का केन्द्र नहीं रहा, बल्कि यहाँ कला और संस्कृति का अद्वितीय विकास हुआ। 18वीं शताब्दी में राजा सावंत सिंह (1748–1764 ई.) के शासनकाल में किशनगढ़ दरबार में बनी–ठनी चित्र शैली का विकास हुआ। इसे भारतीय लघु चित्रकला की उत्कृष्ट कृति माना जाता है। इस किले ने अनेक ऐतिहासिक युद्धों और गठबंधनों का भी साक्ष्य प्रस्तुत किया है।[10]

पर्यटन और वर्तमान स्थिति

आज किशनगढ़ किला अजमेर जिले का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यहाँ आने वाले पर्यटक किले के स्थापत्य, चित्रकला और सांस्कृतिक धरोहर को नजदीक से अनुभव कर सकते हैं। निकटवर्ती गुंडोलाव झीलऔर फूल महल पैलेस भी इस किले की शोभा को बढ़ाते हैं।[11]

किशनगढ़ किला न केवल एक सामरिक गढ़ था, बल्कि यह कला और संस्कृति का केन्द्र भी बना। यहाँ विकसित बनी–ठनी चित्रशैली ने इसे विश्व मानचित्र पर विशेष पहचान दी। स्थापत्य कला, चित्रकला और धार्मिक परंपराओं के अद्भुत संगम के कारण किशनगढ़ किला अजमेर जिले की ऐतिहासिकदृसांस्कृतिक धरोहरों में अद्वितीय स्थान रखता है।

सरवाड़ किला

भूमिका

अजमेर जिले के दक्षिण में स्थित सरवाड़ किला मध्यकालीन दुर्ग स्थापत्य का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। यह किला अपने ऐतिहासिक महत्व, वीरता से जुड़ी लोककथा, सामरिक उपयोगिता और स्थापत्य कला के कारण विशेष स्थान रखता है। स्थानीय परंपरा के अनुसार इस स्थल को 'वीर भूमि' माना जाता है, क्योंकि यहाँ एक बकरी ने पूरी रात अपने बच्चों की रक्षा सियारों से संघर्ष करके की थी। इस घटना से प्रभावित होकर राजा बछराजा गौड़ ने इस स्थान पर किले का निर्माण कराया।

निर्माण और स्थापना

सरवाड़ किले का निर्माण मध्यकाल में हुआ और इसे लगभग 51 बीघा भूमि पर फैलाकर बनाया गया। यह किला मुख्य रूप से व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा और क्षेत्रीय सामरिक नियंत्रण हेतु निर्मित किया गया था। अजमेर और टोंक के बीच यह एक महत्वपूर्ण रक्षात्मक चौकी के रूप में कार्य करता था।[12]

स्थापत्य विशेषताएँ

सरवाड़ किला अपनी स्थापत्य कला और सामरिक डिज़ाइन के लिए प्रसिद्ध है। यह उन गिने–चुने उत्तर भारतीय किलों में है जिनके चारों ओर दोहरी नहरें बनाई गई थीं। किले में सात–सात विशालकाय दरवाजे, हाकिम और नाजिर के महल, विशाल तहखाने और तोपगाड़ियाँ निर्मित थीं। प्रत्येक बुर्ज पर जंगी तोपें तैनात थीं तथा किले में अस्तबल और युद्ध सामग्री के भंडार भी थे। स्थापत्य शैली में स्थानीय राजपूत परंपरा और आंशिक रूप से मुग़ल प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।[13]

सामरिक महत्व

सरवाड़ किला केवल एक रक्षात्मक संरचना नहीं था, बल्कि यह राजनीतिक और सामरिक रणनीति का केन्द्र भी था। चौहान वंश के पश्चात् क्षेत्रीय शक्ति संघर्षों में इस किले ने अहम भूमिका निभाई। यह किला व्यापारिक मार्गों और आस–पास के गाँवों पर नियंत्रण रखने के लिए अनिवार्य था। मुग़ल और मराठा काल में भी यह किला एक सामरिक चौकी के रूप में प्रयुक्त होता रहा।[14]

इतिहास में भूमिका

सरवाड़ किला समय–समय पर स्थानीय विद्रोहों और सामंत संघर्षों का केन्द्र बना। ब्रिटिश काल में भी इसे प्रशासनिक और सैन्य गतिविधियों के लिए प्रयोग में लाया गया। इस प्रकार इसका महत्व केवल सामरिक ही नहीं बल्कि प्रशासनिक दृष्टि से भी था।[15]

पर्यटन और वर्तमान स्थिति

आज सरवाड़ किला आंशिक रूप से खंडहर में परिवर्तित हो चुका है, लेकिन इसकी मजबूत दीवारें, बुर्ज और अवशेष अब भी इतिहास और स्थापत्य की गौरव गाथा कहते हैं। यह किला अजमेर जिले के स्थानीय इतिहास, मध्यकालीन दुर्ग स्थापत्य और क्षेत्रीय शक्ति संतुलन के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है। वर्तमान में यह पर्यटकों और शोधकर्ताओं दोनों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

सरवाड़ किला अजमेर जिले की मध्यकालीन दुर्ग परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। यद्यपि यह तारागढ़ या किशनगढ़ किले जितना विशाल और प्रसिद्ध नहीं, फिर भी इसका सामरिक और प्रशासनिक महत्व क्षेत्रीय इतिहास में विशेष स्थान रखता है।

पीसांगन किला

निर्माण काल और संस्थापक

पीसांगन किले का इतिहास अत्यंत प्राचीन माना जाता है, इतिहास में इसका उल्लेख 17वीं शताब्दी से मिलता है। प्रारंभ में यह क्षेत्र पंवार (परमार) राजपूतों के अधीन था, लेकिन शाहजहाँ के शासनकाल में राव केसरी सिंह राठौड़ (जो जोधपुर के राजा उदय सिंह के पौत्र थे) ने मुग़ल समर्थन से पीसांगन पर अधिकार कर लिया। इस घटना से पीसांगन में राठौड़ वंश की सत्ता स्थापित हुई। तब से लेकर आज तक राठौड़ परिवार की 15 पीढ़ियाँ इस किले में शासन कर चुकी हैं। वर्तमान किला लगभग 155 वर्ष पूर्व (लगभग 1860 के दशक में) बनाया गया था और इसमें लगभग 100 कक्ष हैं। यह संरचना सम्भवतः ब्रिटिश काल में पिसांगन के ठाकुरों द्वारा विस्तारित या पुनर्निर्मित की गई।

ऐतिहासिक महत्व एवं घटनाएँ

पिसांगन उस समय अजमेर क्षेत्र का एक छोटा परन्तु महत्वपूर्ण इस्तिमरारी ठिकाना था। यह किला पुष्कर से लगभग 18 किलोमीटर दूर व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था और अजमेर–मारवाड़ सीमा पर एक बफर की भूमिका निभाता था। यद्यपि यहाँ कोई बड़ी लड़ाई का उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु 17वीं शताब्दी में पंवारों से इसे जीत लेना राठौड़ों के प्रभाव को सुदृढ़ करने की ऐतिहासिक घटना थी। ब्रिटिश शासनकाल में कभी–कभी यह सम्पत्ति कोर्ट ऑफ वार्ड्स के अधीन रही, जिससे यह स्पष्ट है कि इस ठिकाने में वित्तीय अथवा उत्तराधिकार संबंधी विवाद उत्पन्न हुए थे। कुछ विवरणों के अनुसार अंग्रेज अधिकारियों ने यहाँ हस्तक्षेप कर संपत्ति का सर्वेक्षण और आंशिक लूटपाट भी की थी।

सांस्कृतिक दृष्टि से यह किला चामुंडा माता मंदिर के लिए प्रसिद्ध है, जो राठौड़ों की कुलदेवी का मंदिर है। यह मंदिर किले परिसर में स्थित है और यहाँ प्रतिवर्ष विशेष अनुष्ठान तथा उत्सव आयोजित किए जाते हैं, जो स्थानीय धार्मिक जीवन से किले को जोड़ते हैं।

वास्तुकला एवं वर्तमान स्थिति

पिसांगन किला पारंपरिक राजपूत सैन्य स्थापत्य शैली में निर्मित है। इसके चारों ओर मोटी पत्थर की दीवारें हैं जिन पर मेरलॉन (कंगूरे) और तीर चलाने की संकीर्ण खिड़कियाँ बनी हुई हैं। काले पत्थर से निर्मित इसकी ऊँची प्राचीरें आज भी इसे सशक्त रूप प्रदान करती हैं। किला अपेक्षाकृत छोटा है और वर्तमान में गाँव के मकानों से घिरा हुआ है।

समय के साथ इसकी भव्यता फीकी पड़ गई है, भित्तिचित्रों के रंग उड़ गए हैं और दीवारों पर बेलें उग आई हैं। हाल के दशकों में किले के कुछ हिस्सों का उपयोग विद्यालय और महाविद्यालय के रूप में किया गया, जिससे संरचना को क्षति पहुँची। किले के वर्तमान स्वामी (राठौड़ परिवार के वंशज) ने कानूनी कार्यवाही कर इन हिस्सों को खाली कराया और अब वे इसे हेरिटेज होटल के रूप में पट्टे पर देने की योजना बना रहे हैं, ताकि इसके संरक्षण और जीर्णोद्धार के लिए वित्त जुटाया जा सके।

आज पिसांगन किला एक प्रकार से सौंदर्यपूर्ण जीर्णता का प्रतीक है, इसके द्वार, दीवारें और भीतरी आँगन अभी भी संरक्षित हैं, परंतु मरम्मत की आवश्यकता है। किले में चारों कोनों पर गोलाकार बुर्ज हैं और भीतर ठाकुर साहब के निवास हेतु हवेली बनी है, जिसमें भित्तिचित्रों के कुछ अवशेष अब भी मौजूद हैं। राजस्थान सरकार की हेरिटेज होटल योजना के अंतर्गत यदि इसे निजी निवेश से विकसित किया गया तो यह किला पुनः गौरव प्राप्त कर सकेगा और क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रहेगी।[16]

मसूदा किला

निर्माण काल और संस्थापक

मसूदा किला, जिसे फोर्ट मसूदा भी कहा जाता है, का निर्माण लगभग 1595 ईस्वी में 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कराया गया था। इसके मूल संस्थापक का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता, किंतु संभावना है कि इसे राजा किशन सिंह अथवा उनके स्थानीय प्रतिनिधियों द्वारा बनवाया गया। मसूदा मेरतिया राठौड़ों का इस्तिमरारी ठिकाना था (मेरतिया राठौड़, राव दूदा मेड़ता के वंशज माने जाते हैं)। निर्माण के बाद कुछ समय में किला खस्ताहाल हो गया और खंडहर में बदल गया। किंतु 1600 के दशक के प्रारंभ में नर सिंहजी मेरतिया (1583–1623) ने मसूदा का प्रभार लिया और इस किले का पुनर्निर्माण एवं विस्तार कर इसे अपने वैभव पर पहुँचाया। वर्तमान स्वामी इसी मेरतिया वंश के उत्तराधिकारी हैं।

ऐतिहासिक महत्व एवं घटनाएँ

मसूदा किला अजमेर और मारवाड़ की सीमा पर स्थित एक महत्वपूर्ण ठिकाना था। इसका निर्माण अकबर के समय में हुआ, जब यह क्षेत्र मुग़ल अधीनता में था। इसलिए यह संभव है कि यह किला मुग़ल दरबार की स्वीकृति से किसी राजपूत सरदार को प्रदान किया गया हो। नर सिंहजी द्वारा पुनर्निर्माण के बाद यह किला प्रशासन और संस्कृति का केंद्र बन गया। 18वीं शताब्दी में जब मराठों के आक्रमण से राजस्थान में अस्थिरता थी, मसूदा के ठाकुरों ने अपने ठिकाने को सुरक्षित रखा और राजनीतिक संतुलन बनाए रखा। समय के साथ यह किला कला और साहित्य का केंद्र बन गया, यहाँ पांडुलिपियों और लघुचित्रों का संग्रह किया गया और इसे एक सांस्कृतिक धरोहर का रूप दिया गया। अंग्रेजी शासनकाल में यह किला यात्रियों द्वारा उल्लेखनीय ठिकाने के रूप में वर्णित किया गया।

वास्तुकला एवं विशेषताएँ

मसूदा किला सैन्य किलेबंदी और महलनुमा स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह एक विशाल दुर्ग है, जिसमें अनेक आँगन और महल शामिल हैं। नर सिंहजी द्वारा किए गए विस्तार में कई विशिष्ट महल निर्मित किए गए–

- कांच महल : जटिल शीशे के काम के लिए प्रसिद्ध, इसकी दीवारें और छतें दर्पण मोज़ेक से चमकती हैं।
- चंद्र महल : इसकी छतों पर ज्योतिषीय आकृतियाँ और नक्षत्रों के चित्र बनाए गए हैं।
- गुंबज महल : मसूदा के शासकों का मुख्य निवास स्थान, यह गुंबददार महल अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध है।
- बादल महल : ग्रीष्म ऋतु के लिए निर्मित यह महल ठंडी हवाओं और सुखद वातावरण के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया था।
- हवा महल : ऊँची और खुली संरचना वाला यह महल ठंडी हवाओं का आनंद लेने और दूर तक दृश्य देखने के लिए बनाया गया था।

रक्षात्मक दृष्टि से किले के चारों कोनों पर तोप–गुम्बद बने हैं और उन्हें जोड़ने वाली परकोटियाँ हैं। बहुस्तरीय प्रवेश द्वार से भीतर प्रवेश किया जाता है। किले की भीतरी दीवारें राजपूत लघुचित्रों से सुसज्जित हैं जिनमें फ़ारसी शैली का प्रभाव दिखाई देता है। राजाओं के शिकार, पौराणिक कथाएँ और वीरगाथाएँ इन चित्रों में अंकित हैं। किले में एक दुर्लभ पांडुलिपियों का पुस्तकालय भी है जो शासकों की विद्वतापूर्ण रुचि को दर्शाता है।

किले के आंतरिक परिसर में गोपालद्वारा मंदिर भी है, जो संभवतः भगवान कृष्ण को समर्पित है। किले के चारों ओर के टीले अब भी खुदाई की प्रतीक्षा कर रहे हैं, इनके भीतर गुप्त सुरंगें बताई जाती हैं जिनका प्रयोग आपातकाल में निकास हेतु होता था। समीप की सेना नगर पहाड़ियों पर प्रहरी चौकियाँ थीं, जहाँ से चारों ओर की निगरानी रखी जाती थी।

वर्तमान स्थिति

संरक्षण कार्यों के कारण मसूदा किला आज भी अपनी भव्यता के साथ खड़ा है। किले के स्वामी परिवार द्वारा इसे आंशिक रूप से पुनर्स्थापित किया गया है और इसे आगंतुकों के लिए खोला गया है। कांच महल, चंद्र महल और अन्य महलों में आज भी मूल कलाकृतियाँ सुरक्षित हैं, जो कला प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं। मसूदा किला एक आदर्श उदाहरण है कि किस प्रकार एक सैन्य दुर्ग धीरे–धीरे सांस्कृतिक और कलात्मक महल परिसर में परिवर्तित हुआ।[17,18]

वास्तुकला एवं वर्तमान स्थिति

रलावता किला आकार में छोटा किंतु सुदृढ़ किला था। इसमें संभवतः चारदीवारी, कोने पर बुर्ज, एक मुख्य द्वार और आंतरिक आवासीय भवन (हवेली) बने थे। यहाँ सैनिकों के लिए बैरक, अस्तबल और एक केंद्रीय आँगन रहा होगा। किशनगढ़ शैली के अनुसार इसमें देर–मुग़ल स्थापत्य का प्रभाव भी दिखाई देता है, क्योंकि किशनगढ़ के शासक कला और स्थापत्य के संरक्षक थे।

वर्तमान में रलावता किला अपेक्षाकृत अनजान और उपेक्षित है। गाँव में इसके अवशेष आज भी स्थानीय लोगों द्वारा पहचाने जाते हैं। कुछ हिस्सों में द्वार और प्राचीरें अब भी खड़ी हैं, किंतु अधिकांश संरचना जीर्ण–शीर्ण हो चुकी है। यह किला पर्यटन मानचित्र पर नहीं है और इसका कोई प्रमुख संरक्षण कार्य नहीं हुआ है। वंशज परिवार के अधिकांश सदस्य शहरों में बस चुके हैं, इसलिए किले की नियमित देखभाल नहीं हो पाती। वर्तमान में यह किला केवल एक ऐतिहासिक स्मृति–चिह्न के रूप में बचा है, जो किशनगढ़ रियासत के कनिष्ठ राजकुमारों और जागीरी व्यवस्था के इतिहास की गवाही देता है।[19]

दुर्ग स्थापत्य की विशेषताएँ

अजमेर जिले में स्थित दुर्ग राजस्थान की मध्यकालीन दुर्ग स्थापत्य परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन किलों में सामरिक सुरक्षा, स्थापत्य कौशल और स्थानीय भूगोल के अनुकूल निर्माण तकनीक का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

1. ऊँचाई और सामरिक स्थिति

अजमेर जिले के दुर्ग प्रायः पहाड़ियों या ऊँचाई वाले स्थलों पर बनाए गए हैं। तारागढ़ किला नागपहाड़ की ऊँचाई पर स्थित है, जहाँ से पूरे अजमेर और आसपास की घाटियों पर निगरानी रखी जा सकती थी। ऊँचाई पर निर्माण से किलों की प्राकृतिक सुरक्षा बढ़ जाती थी।[20]

2. परकोटे और दीवारें

मोटी और ऊँची पत्थर की दीवारें इन दुर्गों की सबसे प्रमुख विशेषता थीं। इन परकोटों में रक्षा हेतु बुर्ज और प्रहर चौकियाँ बनाई जाती थीं। किशनगढ़ और सरवाड़ किलों में परकोटे के भीतर सुरक्षा की कई परतें मौजूद थीं।[21]

3. विशाल द्वार और प्रवेश प्रणाली

दुर्गों में विशाल और मजबूत द्वार बनाए जाते थे, जो लोहे की कीलों और मोटी लकड़ियों से सुदृढ़ किए जाते थे। तारागढ़ किले के "लक्ष्मी पोल" और "फूटा दरवाजा" तथा किशनगढ़ किले के प्रवेश द्वार इनके प्रमुख उदाहरण हैं।[22]

4. जल प्रबंधन व्यवस्था

युद्ध और घेराबंदी की स्थिति को ध्यान में रखते हुए किलों में जल प्रबंधन की विशेष व्यवस्था की जाती थी। तारागढ़ किले में विशाल जलाशय और भूमिगत टंकियाँ बनाई गई थीं। सरवाड़ और रलावता किलों में भी वर्षाजल संग्रह की तकनीक अपनाई गई।[23]

5. आवासीय और प्रशासनिक भाग

दुर्गों के भीतर शासकों के निवास हेतु महल, दरबार हॉल और भंडारण कक्ष बनाए जाते थे। किशनगढ़ किला इसका सर्वोत्तम उदाहरण है, जहाँ राजमहल और चित्रशाला दोनों मौजूद थे। इन दुर्गों में सैनिकों के लिए बैरक और शस्त्रागार भी निर्मित किए जाते थे।

6. धार्मिक और सांस्कृतिक संरचनाएँ

अधिकांश किलों में मंदिर, मस्जिद या अन्य धार्मिक स्थल भी बनाए गए थे।

तारागढ़ किले के भीतर मंदिर और किशनगढ़ किले के भीतर राजपूत धार्मिक परंपरा से जुड़े मंदिर इस परंपरा को प्रमाणित करते हैं।[24]

अजमेर जिले के दुर्ग स्थापत्य की विशेषताएँ इस बात को प्रमाणित करती हैं कि यहाँ के किले न केवल सैन्य शक्ति और राजनीतिक प्रभुत्वका प्रतीक थे, बल्कि वे धार्मिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक गतिविधियों के केन्द्र भी थे।

ऊँचाई पर निर्मित किले, मजबूत परकोटे, जल प्रबंधन प्रणाली और राजपूत–मुग़ल स्थापत्य का संगम इन्हें अद्वितीय बनाता है।

[1] हर बिलास सारदा, अजमेर : ऐतिहासिक और वर्णनात्मक, हिगिनबॉथम्स, मद्रास, 1911, पृष्ठ 72
[2] मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 95
[3] रीमा हूजा, राजस्थान का इतिहास, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 151
[4] राजस्थान सरकार, अजमेर जिला गजेटियर, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर, 1966, पृष्ठ 187
[5] हर बिलास सारदा, 1911, पृ. 75; रीमा हूजा, 2006, पृ. 153
[6] राजस्थान सरकार, अजमेर जिला गजेटियर, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर, 1966, पृष्ठ 189
[7] मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 101
[8] मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 141
[9] रीमा हूजा, राजस्थान का इतिहास, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 421
[10] गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1960, पृ. 272
[11] राजस्थान सरकार, अजमेर जिला गजेटियर, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर, 1966, पृष्ठ 424
[12] मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 149
[13] राजस्थान सरकार, अजमेर जिला गजेटियर, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर, 1966, पृष्ठ 182
[14] मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 427
[15] हर बिलास सारदा, अजमेर : ऐतिहासिक और वर्णनात्मक, हिगिनबोथम्स, मद्रास, 1911, पृष्ठ 83
[16] हमज़ा खान. ओपन हाउसरू राजस्थान और उसके हेरिटेज होटलों के पीछे की कहानी। द इंडियन एक्सप्रेस, 6 दिसंबर 2015.
[17] फोर्ट मसूदा, अजमेर। हॉलीडिफाई
[18] मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 153
[19] किशनगढ़ (राज्य). IndianRajputs.com, अभिनय राठौड़, अंतिम अद्यतन : 8 जुलाई 2024
[20] हर बिलास सारदा, अजमेर : ऐतिहासिक और वर्णनात्मक, हिगिनबॉथम्स, मद्रास, 1911, पृष्ठ 72
[21] मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 148
[22] राजस्थान सरकार, अजमेर जिला गजेटियर, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर, 1966, पृष्ठ 186
[23] रीमा हूजा, राजस्थान का इतिहास, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 152
[24] गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1960, पृ. 271